29 नवंबर 2022 : PIB विश्लेषण

विषयसूची:

1. मल्टी-एजेंसी HADR अभ्यास 'समन्वय 2022':
2. अंतरराष्ट्रीय जगुआर दिवस:

1. मल्टी-एजेंसी HADR अभ्यास 'समन्वय 2022':

सामान्य अध्ययन: 3

आपदा प्रबंधन

विषय: आपदा और आपदा प्रबंधन।

प्रारंभिक परीक्षा: HADR अभ्यास 'समन्वय 2022' से सम्बंधित तथ्य।

प्रसंग:

- मल्टी-एजेंसी मानवीय सहायता एवं आपदा राहत (HADR) अभ्यास 'समन्वय 2022' भारतीय वायुसेना द्वारा 28-30 नवंबर, 2022 तक आगरा, वायुसेना स्टेशन में आयोजित किया गया।

विवरण:

- रक्षा मंत्री ने उत्तर प्रदेश के आगरा में मल्टी-एजेंसी मानवीय सहायता एवं आपदा राहत (HADR) अभ्यास 'समन्वय 2022' में कहा कि हाल के वर्षों में भारत अपने नागरिकों के साथ-साथ क्षेत्रीय भागीदारों को मानवीय सहायता एवं आपदा राहत प्रदान करने की क्षमता के साथ हिंद-प्रशांत क्षेत्र में एक क्षेत्रीय शक्ति और शुद्ध सुरक्षा प्रदाता के रूप में उभरा है।
- रक्षा मंत्री के अनुसार, सागर (सिक्योरिटी एंड ग्रोथ फ़ॉर ऑल इन द रीजन) के तहत भारत प्राकृतिक आपदाओं जैसे खतरों से निपटने के दौरान क्षेत्र में आर्थिक विकास एवं सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए अनेक भागीदारों के साथ सहयोग कर रहा है।
- भारत ने क्षेत्रीय ढांचों के माध्यम से जुड़ाव पैदा कर बहुपक्षीय साझेदारी को मजबूत किया है।
- एशिया, विशेष रूप से हिंद-प्रशांत क्षेत्र, जलवायु परिवर्तन के प्रभाव के प्रति संवेदनशील है, इसी क्रम में 'समन्वय 2022' में मित्र राष्ट्रों के साथ राष्ट्रीय हितधारकों की भागीदारी आपदा प्रबंधन क्षमताओं में और वृद्धि करेगी।

- विविध क्षमताओं का उपयोग और विशेषज्ञता तथा नई तकनीकों का उपयोग करके प्राकृतिक आपदाओं के प्रभाव को कम किया जा सकता हैं।
- जलवायु संबंधी आपदाओं की बढ़ती आवृत्ति पर ध्यान देते हुए विभिन्न देशों की HADR टीमों के लिए एक मंच पर एक साथ आना आवश्यक है।
- भारत के मजबूत HADR तंत्र ने भारत और अन्य देशों में प्रभावी रूप से राहत प्रदान की है। 'मेक इन इंडिया' पहल ने इस ढांचे को मजबूत किया है।
- राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन नीति के निर्माण के बाद भारत के दृष्टिकोण ने राहत-केंद्रित दृष्टिकोण से रोकथाम, तैयारी, शमन, प्रतिक्रिया, राहत और पुनर्वास सहित 'बहुआयामी' दृष्टिकोण पर ध्यान केंद्रित किया है।
- रक्षा मंत्री ने HADR ऑपरेशनों के दौरान नागरिक प्रशासन को भारतीय सशस्त्र बलों के योगदान और हिंद-प्रशांत क्षेत्र में महत्वपूर्ण HADR मिशनों में उनकी भूमिका की सराहना की, जैसे 2015 में ऑपरेशन राहत और श्रीलंका, नेपाल, इंडोनेशिया, मोजाम्बिक मालदीव तथा मेडागास्कर में राहत अभियान।
- **भविष्य में होने वाली प्राकृतिक आपदाओं से निपटने के लिए एक संयुक्त दृष्टिकोण तैयार करने के लिए HADR गतिविधियों में शामिल विभिन्न एजेंसियों को एक साथ लाने के लिए 'समन्वय 2022' का अहम योगदान हैं।**
- समग्र विकास के लिए आपदा राहत तंत्र को मजबूत करना जरूरी है।

पृष्ठभूमि:

- यह अभ्यास 28-30 नवंबर, 2022 तक आगरा, वायुसेना स्टेशन में भारतीय वायुसेना द्वारा आयोजित किया जा रहा है।
- आसियान देशों के प्रतिनिधि और नागरिक प्रशासन, सशस्त्र बलों, **राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन प्राधिकरण** (एनडीएमए), **राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन संस्थान** (एनआईडीएम), **राष्ट्रीय आपदा प्रतिक्रिया बल** (एनडीआरएफ), **रक्षा अनुसंधान और विकास संगठन** (डीआरडीओ), **सीमा सड़क संगठन** (बीआरओ), **भारत मौसम विज्ञान विभाग** (आईएमडी), **राष्ट्रीय रिमोट सेंसिंग केंद्र** (एनआरएससी) एवं **भारतीय राष्ट्रीय महासागर सूचना सेवा केंद्र** (आईएनसीओआईएस)

सहित आपदा प्रबंधन में शामिल विभिन्न राष्ट्रीय और क्षेत्रीय हितधारक इस अभ्यास में भाग ले रहे हैं।

प्रारंभिक एवं मुख्य परीक्षा की दृष्टि से कुछ महत्वपूर्ण तथ्य:

1.अंतरराष्ट्रीय जगुआर दिवस:

- जगुआर के लिए बढ़ते खतरों और उसके अस्तित्व को सुनिश्चित करने वाले संरक्षण के महत्वपूर्ण प्रयासों के बारे में जागरूकता बढ़ाने के लिए अंतरराष्ट्रीय जगुआर दिवस मनाने की शुरुआत हुई थी।
- **यह हर साल 29 नवंबर को मनाया जाता है।**
- जैव विविधता संरक्षण के लिए एक महत्वपूर्ण प्रजाति, सतत विकास और मध्य एवं दक्षिण अमेरिका की सदियों पुरानी सांस्कृतिक विरासत के प्रतीक के रूप में अंतरराष्ट्रीय जगुआर दिवस मनाया जाता है।
- **यह अमेरिका का सबसे बड़ा वाइल्ड कैट है।**
- संयुक्त राष्ट्र के सतत विकास लक्ष्यों को प्राप्त करने के व्यापक प्रयासों के तहत जगुआर कॉरिडोर और उनके आवासों के संरक्षण की जरूरत पर ध्यान आकर्षित करने के लिए राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय साझीदारों के सहयोग से अंतरराष्ट्रीय जगुआर दिवस संबंधित देशों की सामूहिक आवाज का प्रतिनिधित्व करता है।
- जगुआर (पैंथेरा ओंका) को अक्सर तेंदुआ समझ लिया जाता है लेकिन उनके शरीर पर बने धब्बों के कारण आसानी से अंतर किया जा सकता है।
- वैसे, बिल्ली (CAT) की कई प्रजातियां पानी से दूर रहती हैं लेकिन जगुआर अच्छे से तैर सकते हैं। ये पनामा नहर में भी तैरने के लिए जाने जाते हैं।

चित्र: जगुआर

स्रोत: PIB